विश्व पर्यावरण दिवस

5 जून 2018

विश्व पर्यावरण दिवस के संदर्भ में 5 जून 2018 को सरस्वती शिक्षा महाविद्यालय में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत उपस्थित प्रशिक्षणार्थियों एवं प्राध्यापकगणों ने अपने विचार व्यक्त किये। प्राचार्य महोदया द्वारा संगोष्ठी के प्रारम्भ से इस बात पर बल दिया गया कि सैद्धांतिक चर्चा के स्थान पर स्वयं द्वारा किये गए प्रयासों का उल्लेख करना है।

सर्व प्रथम संगोष्ठी में श्रीमती प्रीति शर्मा द्वारा पर्यावरण की सुरक्षा व संवर्धन के लिये स्वयं को शुरूआत करने और भावी पीढ़ी के लिये अमूल्य प्राकृतिक संपदा को संरक्षित करने के बारे में बताया गया। वे स्वयं प्रशिक्षणार्थियों के माध्यम से प्लास्टिक की थैलियों से पुस्तक पर कवर लगवा कर प्लास्टिक का पुनःप्रयोग कर पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के प्रयास सभी के साथ मिलकर कर रही है।

महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थी हुकुम सिंह ने चर्चा में उनके द्वारा किये गए पौधारोपण व उनके संवर्धन की जानकारी दी।

सुरेन्द्र सिंह सोलंकी एवं उनके मित्रसमूह द्वारा प्रतिवर्ष प्रत्येक सदस्य के जन्म दिवस पर पौधारोपण की जानकारी प्रदान की।

प्रशिक्षणार्थी मोना भोसलें ने ''जल ही जीवन'' कविता के माध्यम से जल को बचाने की सशक्त अपील सभी से की।

इस प्रकार मनीषा शर्मा , उर्वशी शर्मा , दीपिका भावसार , अनिता सोनी , निधि आलिया लक्ष्मीनारायण आदि सभी प्रशिक्षणार्थियों ने पर्यावरण सुरक्षा में किस तरह अपना सहयोग प्रतिदिन प्रदान करते हैं अपने विचारों के द्वारा व्यक्त किया।

प्राध्यापकगण में सर्वप्रथम डॉ. पवित्रा शाह द्वारा बताया गया की उन्होने अपने घर के जामुन के पेड़ को कटने से बचाया तथा स्वरचित कविता के माध्यम से वृक्षों की हमारे जीवन में सार्थकता को स्पष्ट किया।

डॉ. बिलकिस बादशाह ने भारतीय त्यौहारों मे वृक्षों (बड़ , पीपल , तुलसी) के महत्व व पर्यावरण संरक्षण का गहन संबंध बताया तथा जल बचाओं का अनुठा उपाय किया जो की उन्होनें महाविद्यालय की प्राचार्य महोदया से सीखा कि हम उतना जल ही गिलास में भरें जितना उपयोग करना है , व्यर्थ जल ना बहावें तथा उसे सुरक्षित रखें और सभी यह आदत अपने जीवन में अपनाऐं।

डॉ. रश्मि पण्डया द्वारा अपने परिवार की प्रत्येक सदस्य के जन्म दिवस पर घर पर गमलों में पौधारोपण किये जाने की अनुठी पहल की चर्चा की।

वरिष्ठ प्राध्यापक श्री लक्ष्मीकांत द्विवेदी द्वारा पौधारोपण को लेकर अपने प्रश्नों के साथ उन्होनें समाधान भी प्रस्तुत किये कि पौधा रोपने से ही हमारे कर्तव्य पूर्ण नहीं होते वरन एक सम्पूर्ण वृक्ष बनने तक हमें उसका लालन–पालन पूर्ण जिम्मेदारी से करना चाहिए।

महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. (श्रीमती) स्मिता भवालकर द्वारा लिखित सन 1999 की नायिका समाचार–पत्र में प्रकाशित लेख ''पारिवारिक स्तर पर जल प्रबंधन'' के बारे में बता कर प्रशिक्षणार्थियों से पूछा कि उन्होनें अपनी किन आदतों में परिवर्तन किया जिससे पर्यावरण संरक्षण में योगदान दिया हैं। उन्होने बताया वे स्वयं फल व सब्जियों को धोने के पश्चात उस पानी को बगीचे में डालती हैं। सब्जी फल के छिल्कों , चाय पत्ती को एक स्थान पर एकत्रित कर खाद के रूप में उपयोग करती हैं। प्लास्टिक की थैली के स्थान पर कपड़े की थैलियों का उपयोग स्वयं कर अन्य लोगों को भी प्रेरित करती हैं।

''तेन त्यक्तेन भुंजीथा'' उन्होनें जीवन में आत्मसात कर लिया है , अर्थात प्रत्येक वस्तु या प्राकृतिक संपदा का उतना ही उपयोग जितना हमारे लिये आवश्यक है , जिससे भावी पीढ़ी को हम उपहार स्वरूप यह अमूल्य धरोहर उसी रूप में प्रदान कर पाए जैसे हमें प्राप्त हुई हैं।